रणजीत टाइम्स

इंदौर

बुधवार, 14 जनवरी, 2026

वर्ष 02 | अंक 15 कुल पृष्ठ : 8 | Digital

RNI-NO.MPHIN/2015/64585

प्रधान संपादक : गोपाल गावंडे

नितिन नबीन इस दिन संभालेंगे बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी, जेपी नड्डा की लेंगे जगह, जानें प्लान

दिल्लीः भारतीय जनता पार्टी को नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के तौर पर नितिन नबीन 20 जनवरी को पदभार संभालेंगे। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पार्टी के कई बड़े नेता मौजूद रहेंगे। इनमें मुख्यमंत्री, राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रदेश पार्टी अध्यक्ष और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य शामिल होंगे। नितिन नबीन अभी बीजेपी के कार्यकारी अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। खरमास समाप्त होने के बाद नबीन बीजेपी के मौजूदा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की जगह लेंगे। नड्डा पार्टी के सबसे लंबे समय तक अध्यक्ष रहने वाले दिग्गजों में से एक थे।

नितिन नबीन 20 बनेंगे राष्ट्रीय अध्यक्ष

नितिन नबीन को वर्किंग प्रेसिडेंट बनाए जाने के बाद से ही पार्टी के बड़े नेताओं का उन्हें पूरा समर्थन मिला है। ऐसे में 20 जनवरी को होने वाला बीजेपी अध्यक्ष पद का चुनाव महज एक औपचारिकता माना जा रहा है। इसी के साथ बीजेपी में कई बड़े बदलाव की भी तैयारी है। नितिन नबीन पार्टी के सबसे युवा अध्यक्ष होंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूरे समर्थन से, 46 वर्षीय नितिन नबीन बीजेपी के सबसे युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने जा रहे हैं। उनकी यह नियुक्ति पार्टी में बड़े बदलाव का संकेत मानी जा रही है।

15 दिसंबर को चुने गए बीजेपी वर्किंग प्रेसिडेंट

नितिन नबीन को जिम्मेदारी मिलते ही माना जा रहा कि पार्टी में युवा जोश और अनुभवी नेताओं का एक अच्छा मिश्रण देखने को मिलेगा। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, अध्यक्ष पद के लिए नामांकन 19 जनवरी को होगा और अगले दिन चुनाव संपन्न होगा। पार्टी सूत्रों ने बताया कि नामांकन प्रक्रिया पूरी होने के बाद, अगले दिन नबीन को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिया जाएगा। उन्हें 15 दिसंबर को बीजेपी का वर्किंग प्रेसिडेंट बनाया गया था, लेकिन 'खरमास' के कारण उनके औपचारिक पदभार ग्रहण में देरी हुई।

Cartoon by Gopal Gawande

डिफेंस, ट्रेड, टेक्नोलॉजी.. भारत और जर्मनी के बीच इन 19 समझौतों पर बनी बात

जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज भारत के दो दिवसीय दौरे पर हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने जर्मन चांसलर की गुजरात में मेजबानी की। इस दौरान भारत और जर्मनी के बीच सेमीकंडक्टर और एआई समेत 27 अहम मुद्दों पर बात बनी। भारत के विदेश मंत्रालय ने इस बात की जानकारी दी। द्विपक्षीय रक्षा औद्योगिक सहयोग को मजबूत करने पर संयुक्त इरादे की घोषणा हुई। भारत और जर्मनी ने रक्षा, व्यापार और महत्वपूर्ण तकनीकों के क्षेत्र में अपने संबंधों को मजबूत करने का फैसला किया है। दोनों देशों के बीच 19 समझौते हुए। इसके अलावा, लोगों के बीच संपर्क, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र और हरित विकास जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए आठ अन्य घोषणाएं भी की गईं। भारत जर्मनी डील की बड़ी बातें पीएम मोदी और जर्मन चांसलर की अहम मुलाकात- भारत और जर्मनी के बीच हुई डील में एक खास बात यह है कि अब भारतीय पासपोर्ट धारकों को जर्मनी से होकर गुजरने के लिए वीजा की जरूरत नहीं होगी। दोनों देशों के बीच रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाने के लिए एक संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए। प्रधानमंत्री मोदी ने जर्मन चांसलर से मुलाकात के बाद कहा कि दोनों देश अपनी डिफेंस इंडस्ट्री के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए एक योजना पर काम करेंगे। इससे सह-विकास और सह-उत्पादन के नए अवसर खुलेंगे।

पीएम मोदी ने कहा कि रक्षा और सुरक्षा में बढ़ता सहयोग हमारे आपसी विश्वास और साझा दृष्टिकोण का प्रतीक है। मैं जर्मन चांसलर मर्ज का रक्षा व्यापार से जुड़ी प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूं। महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए चार समझौते किए गए। भारत-जर्मनी के बीच 19 डील पर मुहर- इनमें सेमीकंडक्टर (ऐसे चिप्स जो इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में इस्तेमाल होते हैं) और महत्वपूर्ण खनिज (जैसे लिथियम, कोबाल्ट जो बैटरी और अन्य तकनीकों के लिए जरूरी हैं) शामिल हैं। यह मुलाकात भारत और जर्मनी के बीच दोस्ती को और गहरा करने का एक बड़ा कदम है। दोनों देश मिलकर कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आगे बढ़ेंगे। जानें भारत और जर्मनी के बीच किन-किन मुद्दों पर सहमति बनी।मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के फोरम की स्थापना करके द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग को मजबूत करने का ऐलान संयुक्त भारत-जर्मनी आर्थिक और निवेश समिति के हिस्से के रूप में एकीकृत करने का फैसला हुआ भारत-जर्मनी सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम पार्टनरशिप पर संयुक्त इरादे की घोषणा महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में सहयोग पर संयुक्त आशय घोषणा दूरसंचार के क्षेत्र में सहयोग पर संयुक्त आशय घोषणा राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान और इनफिनियॉन टेक्नोलॉजीज एजी के बीच एमओयू पर साइन। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान और चैरिटे विश्वविद्यालय, जर्मनी के बीच एमओयू। पेट्रोलियम और नेचुरल गैस रेगुलेटरी बोर्ड (पीएनजीआरबी) और जर्मन टेक्निकल एंड साइंटिफिक एसोसिएशन फॉर गैस एंड वॉटर इंडस्ट्रीज (डीवीजीडब्ल्यू) के बीच एमओयू। भारतीय कंपनी एएम ग्रीन और जर्मन कंपनी यूनिपर ग्लोबल कमोडिटीज के बीच ग्रीन अमोनिया के लिए ऑफटेक समझौता जैव अर्थव्यवस्था पर अनुसंधान और विकास में संयुक्त सहयोग के लिए संयुक्त आशय की घोषणा इंडो-जर्मन साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेंटर (आईजीएसटीसी) के समय को बढ़ाने पर जॉइंट डिक्लेरेशन ऑफ इंटेंट (जेडीआई) उच्च शिक्षा पर भारत-जर्मनी रोडमैप पर चर्चा हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स की फेयर, एथिकल और सस्टेनेबल भर्ती के लिए ग्लोबल स्किल पार्टनरशिप की फ्रेमवर्क शर्तों पर जॉइंट डिक्लेरेशन ऑफ इंटेंट (जेडीआई) हैदराबाद में नेशनल स्किल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में रिन्यूएबल एनर्जी में स्किलिंग के लिए नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना के लिए जॉइंट डिक्लेरेशन ऑफ इंटेंट (जेडीआई)।

रणजीत टाइम्स
इंदौर, बुधवार 14 जनवरी 2026

करैरा में रेत माफिया बेखौफ

नदियों से लेकर सड़कों तक अवैध रेत का खेल, दिनदहाड़े दौड़ रहे ट्रैक्टर-ट्रॉली फोटो साक्ष्य सामने, फिर भी कार्रवाई नदारद

दीपक परमार

करैरा एवं आसपास के क्षेत्रों में रेत माफिया के हौसले इस कदर बुलंद हैं कि अब अवैध उत्खनन केवल नदी घाटों तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि उसका परिवहन भी खुलेआम सड़कों पर किया जा रहा है। सामने आए फोटो साक्ष्यों में रेत से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली का दिनदहाड़े मुख्य मार्ग से गुजरना साफ दिखाई दे रहा है, जो प्रशासनिक निगरानी और कार्रवाई पर गंभीर सवाल खड़े करता है। नदियों के भीतर पनडुब्बी मशीनों, मोटर पंप और पाइपलाइन के जरिए अवैध उत्खनन कर रेत निकाली जा रही है और फिर उसी रेत को बिना किसी वैध रॉयल्टी या अनुमति के ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के माध्यम से विभिन्न स्थानों तक पहुंचाया जा रहा है। यह पूरा तंत्र इतने व्यवस्थित तरीके से संचालित हो रहा है कि इसे केवल छोटी-मोटी चोरी नहीं, बल्कि संगठित अवैध कारोबार माना जा रहा है।

निदहाड़े चलता है अवैध परिवहन

स्थानीय नागरिकों और ग्रामीणों का कहना है कि रेत माफिया अब रात के अंधेरे का इंतजार भी नहीं करता। सुबह से शाम तक रेत से लदी ट्रॉलियां सड़कों पर फर्राटा भरती नजर आती हैं। कई बार तो ये वाहन रिहायशी इलाकों और बाजारों से होकर

गुजरते हैं, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा भी बना रहता है। इसके बावजूद न तो परिवहन रोका जा रहा है और न ही वाहनों की जांच होती दिखाई दे रही है।पर्यावरण और जनजीवन पर सीधा असर अवैध रेत उत्खनन से नदियों का प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो रहा है। नदी किनारों का कटाव बढ़ रहा है, खेतों की उपजाऊ मिट्टी नष्ट हो रही है और भूजल स्तर पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि कई स्थानों पर खेतों की जमीन धंसने लगी है, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।प्रशासनिक दावों पर सवालखनिज विभाग और जिला प्रशासन द्वारा समय-समय पर अवैध रेत उत्खनन के खिलाफ सख्त कार्रवाई के दावे किए जाते हैं, लेकिन जमीनी हकीकत इन दावों से अलग नजर आ रही है। जब दिन के उजाले में रेत से भरी ट्रॉलियां सड़कों पर चल रही हों, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि निगरानी तंत्र आखिर कहां है? क्या कार्रवाई केवल कागजों तक।

सीमित रह गई है पहले भी हो चुके हैं खुलासे

यह पहला अवसर नहीं है जब करैरा क्षेत्र में रेत माफिया का मामला सामने आया हो। पूर्व में भी अवैध उत्खनन और परिवहन के मामलों में कार्रवाई की गई, लेकिन कुछ समय बाद माफिया फिर सक्रिय हो गया। इससे स्पष्ट है कि अब केवल छिटपुट कार्रवाई नहीं, बल्कि निरंतर और ताबड़तोड़ अभियान की आवश्यकता है।

सख्त कार्रवाई की उठी मांग क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि अवैध रेत उत्खनन और परिवहन में संलिप्त सभी वाहनों को तत्काल जब्त किया जाए, दोषियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई हो और नदी घाटों व प्रमुख मार्गों पर स्थायी निगरानी व्यवस्था लागू की जाए। ड्रोन सर्वे, चेक पोस्ट और नियमित गश्त से ही इस अवैध कारोबार पर प्रभावी रोक लगाई जा सकती है।यदि अब भी ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले समय में पर्यावरणीय नुकसान के साथ-साथ कानून-व्यवस्था की स्थिति भी गंभीर हो सकती है। अब देखना यह है कि इन स्पष्ट फोटो साक्ष्यों के बाद प्रशासन रेत माफिया पर ताबड़तोड़ कार्रवाई करता है या फिर यह अवैध खेल यूं ही जारी रहेगा।

कमिश्नर कार्यालय में हुआ जनसुनवाई का आयोजन

प्रदीप सिंह बघेल

शहडोल कमिश्नर शहडोल संभाग श्रीमती सुरभि गुप्ता ने शहडोल संभाग के दूर-दराज क्षेत्रों से आए लोगों की समस्याएं और शिकायतें सुनी और उनके निराकरण समय-सीमा में करने के निर्देश संबंधित विभाग के अधिकारियों को दिए।

जनसुनवाई में उमरिया जिले के मानपुर से आए वीरेंद्र कुमार द्विवेदी ने वेतन भुगतान कराने, शहडोल जिले के ग्राम बुडवा निवासी युवराज सिंह बैंस ने शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बुडवा में अतिथि शिक्षक के पद पर नियुक्ति करने, ग्राम छतैनी निवासी सुनीता ने शासकीय प्राथमिक विद्यालय में मध्यान्ह भोजन बनाने का कार्य दिलाने, ब्यौहारी वार्ड नम्बर 7 निवासी पिंकू चौधरी ने पीएम आवास योजना की राशि दिलाने, ग्राम भर्री निवासी धरमदीन बैगा ने ग्राम भर्री में नवीन ऑगनवाड़ी भवन बनवाने, ग्राम नगपुरा निवासी अशोक कुमार गुप्ता ने खाद्यान्न दिलाने हेतु आवेदन जनसुनवाई में दिए। कमिश्नर ने प्राप्त आवेदनों के निराकरण हेतु संबंधित विभाग के अधिकारी की ओर आवेदन प्रेषित कर शीघ्रता के साथ निराकरण करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार अन्य अवेदकों ने भी अपनी शिकायतें एवं समस्याओं संबंधी आवेदन कमिश्नर को दिए। जनसुनवाई में संयुक्त आयुक्त विकास श्री मगन सिंह कनेश, उपायुक्त राजस्व मिनिषा पाण्डेय सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

शिवपुरी में स्मैक का कहर, पूरे शहर में फैला नशे का जाल

ऋषि गोस्वामी

शिवपुरी शहर में स्मैक का नशा तेजी से अपने पैर पसारता जा रहा है। हालात यह हैं कि शहर के कई इलाकों में स्मैक की खुलेआम बिक्री की चर्चाएँ आम हो चुकी हैं। युवा वर्ग बड़ी संख्या में इस खतरनाक नशे की चपेट में आता जा रहा है, लेकिन इसके बावजूद पुलिस और प्रशासन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई होती नज़र नहीं आ रही है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि स्मैक तस्कर बेखौफ होकर शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में सक्रिय हैं। स्कूल-कॉलेज के आसपास और रिहायशी इलाकों में भी नशे की सप्लाई होने की शिकायतें सामने आ रही हैं। इससे न केवल युवाओं का भविष्य अंधकार में जा रहा है, बल्कि शहर की सामाजिक व्यवस्था पर भी गंभीर खतरा मंडरा रहा है। शहरवासियों का आरोप है कि कई बार शिकायतों के बावजूद न तो नियमित छापेमारी हो रही है और न ही बड़े नशा तस्करों पर कोई प्रभावी कार्रवाई। इससे तस्करों के हौसले और बुलंद होते जा रहे हैं। स्मैक जैसे खतरनाक नशे का बढ़ता चलन शिवपुरी के लिए एक गंभीर चेतावनी है। अब जरूरत है कि पुलिस प्रशासन इस ओर तत्काल ध्यान दे, नशे के कारोबार में लिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कदम उठाए और युवाओं को इस दलदल से बाहर निकालने के लिए जागरूकता अभियान चलाए। शहर की जनता अब जवाब चाहती है कि आखिर कब तक शिवपुरी का भविष्य नशे की भेंट चढ़ता रहेगा।

इंदौर

इंदौर, बुधवार 14 जनवरी 2026

रणजीत टाइम्स

पुलिस थाना छतरीपुरा द्वारा प्रतिबंधित पतंग धागे के 20 रोल (लगभग 9000 /- रूपये कीमती) जप्त कर किया प्रकरण दर्ज

खुशबू श्रीवास्तव

इंदौर कमिश्नरेट मे अवैध रुप से प्रतिबंधित चाइनीज मांझा बेचने वालो पर नियंत्रण हेतु प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश पुलिस आयुक्त नगरीय इंदौर द्वारा दिये गये है। उक्त निर्देशों के तारतम्य मे अतिरिक्त पुलिस आयुक्त अमित सिंह ,डीसीपी ज़ोन-04 आनंद कलादगी, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जोन 04 दीशेष अग्रवाल, सहायक पुलिस आयुक्त हेमंत चौहान के मार्गदर्शन में पुलिस थाना छतरीपुरा के द्वारा प्रतिबंधित पतंग-धागे से संबंधित प्रतिबंधात्मक आदेशों के परिपालन में चेकिंग व कार्यवाही की जा रही है इसी क्रम में थाना प्रभारी संजीव श्रीवास्तव के निर्देशन में पतंग दुकानों चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है मुखबिर सूचना हमराह बल आर. 3497 अरुण सिंह चौहान व आर. 1472 भूपेन्द्र राजोरिया के इलाका भ्रमण में रवाना होकर बियाबानी चौराहा पहुचां जहां मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति जंगमपुरा बियाबानी मैन रोड फुटपाथ, इंदौर में प्रतिबंधित धागा (मांझा) बेच रहा है सूचना पर विश्वास कर हमराह बल को सूचना से अवगत कराया व साथ लेकर जंगमपुरा बियाबानी मैन रोड फुटपाथ मुखबिर व्दारा बताये स्थान पर पहुंचा। जहां पर एक व्यक्ति अपने फुटपाथ पर दुकान लगाकर पतंग मांझे की दुकान लगाकर एक चरखी

राहुल भाटी पिता अशोक भाटी उम्र 27 साल निवासी 313 /16 समाजवाद इंदिरा नगर

जिस पर रेड पांडा छपा होकर रेड पांडा लिखा होकर threads for industrial use only लिखा है जो कि पतंग उड़ाने के लिये प्रतिबंधित होकर सामान्य जन जीवन के लिये घातक है। दुकान संचालक उक्त इंस्ट्रियल धागा रखने व बेचने के संबंध में कोई अनुज्ञप्ति या अनुमति का पुछते कोई अनुज्ञप्ति या अनुमति का नहीं होना बताया। जिसका नाम पता पूछते उसने अपना नाम रोहित हातुनिया पिता चुन्नीलाल हातुनिया उम 36 साल नि. 10 जंगमपुरा, बियाबानी, इंदौर मो 9977702205 का बताया। माननीय कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी जिला इन्दौर के व्दारा प्रख्यापित आदेश क्र/1158/ रीएडीएम/2025 इन्दौर, दिनांक 25.11.2025 के माध्यम से इन्दौर जिले की राजस्व सीमा में चायनीज धागा पतंगबाजी में उपयोग एवं बेचने को प्रतिबंधित करने संबंधी आदेश के उल्लघंन में चुन्नीलाल हातुनिया के कब्जे से प्रतिबंधित threads (Industrial use only) के कुल 20 गट्टा (कोण) कीमत लगभग 9000 रु. का मौके से आरोपी रोहित से समक्ष पंचान आषीश हतुनिया, व जंयत परमार व आर. 3497 अरुण सिंह चौहान व आर. 1472 भूपेन्द्र राजोरिया के समक्ष विधिवत जप्त कर जप्ती पंचनामा तैयार किया गया। हालात थाना प्रभारी महोदय को बताये गये। श्रीमान थाना प्रभारी महोदय के आदेशानुसार वापसी पर आरोपी के विरुद्ध अपराध धारा 223 (B), 125 बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। उपरोक्त कार्यवाही में निरीक्षक संजीव श्रीवास्तव उप निरीक्षक पवन कुमार नरवरे प्रधान आरक्षक धर्मेंद्र पाठक ,आरक्षक अरुण सिंह चौहान, आरक्षक भूपेंद्र सिंह, आरक्षक धर्मेंद्र सिंह सोनगरा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

वेयरहाउस में हुआ ई.व्ही.एम. व्ही.व्ही.पी.ए.टी का निरीक्षण

प्रदीप सिंह बघेल

शहडोल कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ.केदार सिंह ने राजनैतिक दल के प्रतिनिधियो की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट परिसर में स्थित ई.व्ही.एम. व्ही.व्ही.पी.ए.टी वेयरहाउस का मासिक निरीक्षण (बिना ताला खोले) किया। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती अमृता गर्ग सहित राजनैतिक दल के प्रतिनिधि श्री विष्णुप्रताप सिंह, निर्वाचन सुपरवाईजर श्री संजय खरे सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

नशे और साजिश का काला खेलः एक मां का इंसाफ के लिए दर्दनाक विलाप

शिवपुरी में नशा न केवल एक व्यक्ति को खत्म करता है, बल्कि पूरे परिवार को तबाह कर देता है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक हालिया वीडियो में एक बेबस मां के आंसू व्यवस्था और समाज पर गहरे सवाल खड़े कर रहे हैं।

क्या है पूरा मामला?

महिला बिलख-बिलख कर आरोप लगा रही है कि उसके 25 वर्षीय बेटे को साजिश के तहत नशे के जाल में फंसाया गया। महिला का कहना है कि उसे कोई "केमिकल वाला नशा" (ड्रग्स) दिया गया, जिससे उसकी मौत हो गई

प्रमुख आरोपः-संपत्ति और लालचः महिला ने आरोप लगाया है कि उसके बेटे को नशे की लत लगाकर उसकी 'एक्टिवा' और पूरी जमा-पूंजी छीन ली गई। प्रशासन की उदासीनताः महिला का दावा है कि वह इस मामले की शिकायत लेकर थाने के चक्कर काट चुकी है, लेकिन उसकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। उसने कहा, "मैं थाने गई, लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी।" डंडा बैंक और नशे का सिंडिकेटः वीडियो के शीर्षक और महिला की बातों से संकेत मिलता है कि यह मामला केवल नशे तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे संपत्ति हड़पने वाले किसी गिरोह या 'डंडा बैंक' (अवैध ब्याज/

वसूली का धंधा) का हाथ हो सकता है।

न्याय की गुहार-महिला के रोते हुए शब्द-"मेरे बेटे को खत्म कर दिया, उसका माइंड ब्लॉक कर दिया"-किसी भी व्यक्ति को झकझोर देने वाले हैं। यह घटना दिखाती है कि कैसे नशा अब केवल स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं, बल्कि एक बड़ा अपराध बन चुका है जहाँ युवाओं को निशाना बनाकर उनकी संपत्ति लूटी जा रही है।

महाकाल के दरबार में गूंजा 5500 पुलिसकर्मियों का दर्द, निजी बंगलों में नौकर बनाए जाने का आरोप, मुख्यमंत्री से न्याय की गुहार

उज्जैन। मध्यप्रदेश पुलिस के 5500 से अधिक ट्रेड आरक्षकों ने देश में संभवतः पहली बार अपनी पीड़ा और अपमान को न्याय के देवता महाकाल बाबा के दरबार तक पहुँचाया है। इन आरक्षकों ने उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में सामूहिक प्रार्थना-पत्र अर्पित कर मुख्यमंत्री से मानवीय हस्तक्षेप और न्याय की मांग की है। यह प्रार्थना-पत्र केवल एक शिकायत नहीं, बल्कि उस पीड़ा का दस्तावेज है, जो वर्षों से पुलिस की वर्दी पहनने वाले जवान झेलते आ रहे हैं। ट्रेड आरक्षकों का आरोप है कि उन्हें जनता की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए नहीं, बल्कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के निजी बंगलों में घरेलू नौकरों की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। पत्र में बताया गया है कि उनसे झाड़ू-पोंछा, बर्तन धोना, घर की साफ-सफाई करना, खाना बनाना, बच्चों की देखभाल करना और यहां तक कि पालतू कुत्तों की सेवा जैसे कार्य कराए जा रहे हैं। आरक्षकों का कहना है कि यह न केवल संविधान की भावना के खिलाफ है, बल्कि मानवाधिकारों का भी खुला उल्लंघन है, जो पुलिस बल की गरिमा को ठेस पहुँचाता है। प्रार्थना-पत्र में ट्रेड आरक्षकों ने वर्ष 2012 का जिक्र करते हुए कहा है कि उस समय पुलिस महानिदेशक नंदन दुबे के कार्यकाल में उनका एक महत्वपूर्ण अधिकार छीना गया। पहले मध्यप्रदेश में शासन आदेश क्रमांक 57/93 के तहत ट्रेड आरक्षकों को पांच वर्ष की सेवा पूर्ण करने के बाद सामान्य ड्यूटी में संविलियन किया जाता था। इससे वे फील्ड में जाकर कानून-व्यवस्था, जनता की सुरक्षा और अपराध नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण कार्य करते थे। लेकिन वर्ष 2012 में निजी स्वार्थों के चलते यह व्यवस्था अचानक समाप्त कर दी गई। इसके बाद 5500 में से बड़ी संख्या में जवान आज तक अधिकारियों की निजी सेवा में फंसे हुए हैं।

आरक्षकों ने पत्र में आर्थिक नुकसान का भी चौंकाने वाला खुलासा किया है। उनका कहना है कि प्रदेश के 5500 ट्रेड आरक्षकों पर सरकार हर साल लगभग 250 से 300 करोड़ रुपये खर्च कर रही है, जबकि यही काम यदि बाहरी ठेके पर रखा जाए तो मात्र लगभग 45 करोड़ रुपये सालाना में हो सकता है। इस तरह हर वर्ष करीब 250 करोड़ रुपये की सीधी बर्बादी हो रही है, जो आम जनता के कर के पैसे से आती है। आरक्षकों का कहना है कि यह न तो प्रशासनिक रूप से उचित है और न ही आर्थिक रूप से तर्कसंगत। कानूनी पक्ष का हवाला देते हुए ट्रेड आरक्षकों ने बताया कि मद्रास उच्च न्यायालय पहले ही अर्दली प्रथा को अवैध घोषित कर चुका है। इसके अलावा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 13 के अनुसार भी किसी सरकारी कर्मचारी को निजी सेवा में लगाना भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है। इसके बावजूद मध्यप्रदेश में यह व्यवस्था वर्षों से जारी है, जो कानून और न्याय दोनों पर सवाल खड़े करती है।

इस पूरे घटनाक्रम को और भी भावनात्मक बनाते हुए ट्रेड आरक्षकों ने मुख्यमंत्री से सीधे अपील करने के बजाय महाकाल बाबा के दरबार में शिवलिंग पर प्रार्थना-पत्र समर्पित किया। उनका कहना है कि वे चाहते हैं कि भगवान महाकाल मुख्यमंत्री के हृदय में करुणा और संवेदनशीलता जगाएं। पत्र में लिखे शब्दों ने हर किसी को झकझोर दिया है। उसमें कहा गया है कि उनकी वर्दी आज अपमान से झुकी हुई है और वे नहीं चाहते कि उनके बच्चे यह कहें कि उनके पिता गुलाम थे। यह मामला अब राजनीतिक और सामाजिक हलकों में तेजी से चर्चा का विषय बनता जा रहा है। पुलिस परिवारों और उनके सहयोगियों के अनुसार यह प्रार्थना-पत्र और उसकी प्रतिलिपि मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुँच चुकी है। यदि इस पर शीघ्र और ठोस कार्रवाई नहीं की गई, तो यह मुद्दा आने वाले समय में एक बड़े सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन का रूप ले सकता है, जो राज्य की राजनीति को भी प्रभावित कर सकता है।

आध्यात्मिक नवीनीकरण का समय है मकर संक्रांति

भारत में वर्ष के इस समय सूर्य की गति में परिवर्तन का स्वागत करने के लिए मकर संक्रांति नामक त्योहार मनाया जाता है। मकर संक्रांति, जैसा कि श्री माताजी ने बताया है, आध्यात्मिक यात्रा में एक शक्तिशाली बदलाव का प्रतीक है, जो परिवर्तन और विकास को दर्शाता है।

आंतरिक प्रकाश को जगाने का पर्व- उत्तरी गोलार्ध में मकर संक्रांति सूर्य के उत्तर की ओर संक्रमण का प्रतीक है। यह बदलाव हमारे आंतरिक प्रकाश के जागरण का प्रतीक है। जबकि दक्षिणी गोलार्ध के लिए मौसमी संदर्भ बदलता है, नवीकरण और उत्थान का आध्यात्मिक सार समान रूप से महत्वपूर्ण रहता है। मिथ्या धारणाओं के त्याग का पर्व- श्री माताजी ने इस बात पर जोर दिया कि यह नकारात्मक आदतों, लगाव और अहंकार को त्यागने और नई शुरुआत का मार्ग प्रशस्त करने का समय है। प्रेम, सौहार्द व मिठास के प्रसार का पर्व-तिल और गुड़ (तिल-गुल) से बनी मिठाइयाँ बाँटना एक आम परंपरा है। श्री माताजी ने बताया कि ये मिठाइयाँ मधुर वाणी और सौहार्दपूर्ण संबंधों का प्रतीक हैं।

श्री माताजी के पावन शब्दों में, "आज पवित्र क्रांति का दिन है। लेकिन आरोहण के माध्यम से, जब हम एक उच्च स्थिति प्राप्त करते हैं, तो यह तभी संभव है जब क्रांति हो और क्रांति सर्पिल रूप से हो ऊंचे स्थान पर पहुंचने के लिए आंदोलन को सर्पिल होना होगा। तो ये वो क्रांति है जो पवित्र क्रांति है. मैं हमारे भीतर की क्रांति के बारे में बात कर रही हूं। इस क्रांति में आपकी अपनी माँ, कुंडलिनी द्वारा आपकी बहुत मदद की जाती है, और आप बहुत मधुर तरीके से विकसित होते हैं;

आत्मसाक्षात्कारी आत्माओं के रूप में नीचे उतरने के लिए एक सर्पिल आरोहण में।" श्री माताजी 14 जनवरी 1984 मकर संक्रांति भीतर आत्मा की रोशनी का जश्न मनाने का समय दर्शाती है। संक्रांति के पावन पर्व पर यह प्रण लेना चाहिए कि श्री माताजी की कृपा से व हमारे प्रयास से अनेकानेक लोग आत्मिक उत्थान को प्राप्त हो सकें तथा हम स्वयं भी अपने आत्मिक उत्थान को विकसित कर सकें | अपने अंदर सूर्य की शक्तियों को जागृत कर सकें तथा परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनें। परमात्मा के कार्य का साधन होना अत्यंत गौरव की बात है और इस गौरव का आनंद आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही प्राप्त किया जा सकता है। निःशुल्क ध्यान प्रशिक्षण हेतु तथा अपने आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति हेतु जानकारी टोल फ्री नंबर 18002700800 अथवा यूट्यूब चैनल लर्निंग सहजयोगा से प्राप्त कर सकते हैं। सहज योग पूर्णतया निशुल्क है।

काशी में देवी अहिल्या की विरासत पर चला बुलडोजर,

सह संपादक- रंजीत टाइम्स

इंदौर में भारी आक्रोश; प्रधानमंत्री से जांच की मांग वाराणसी/इंदौरः काशी के मणिकर्णिका घाट पर लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित ऐतिहासिक धरोहर के एक हिस्से को प्रशासन द्वारा ध्वस्त किए जाने के बाद विवाद खड़ा हो गया है। इस घटना को लेकर इंदौर सहित देशभर के विभिन्न समाजों में गहरा रोष है। 'खासगी ट्रस्ट' के अध्यक्ष यशवंतराव होलकर ने इस मामले में सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर उच्च स्तरीय जांच की मांग की है।

क्या है पूरा मामला?

वाराणसी (काशी) के मणिकर्णिका घाट के पुनर्विकास और 'कायाकल्प' के नाम पर वहां मौजूद प्राचीन निर्माणों को हटाया जा रहा है। इसी कड़ी में अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित विरासत को भी नुकसान पहुँचाया गया है। बताया जा रहा है कि 1771 में देवी अहिल्या ने इस घाट का जीर्णोद्धार कराया था और 1791 में यहां ऐतिहासिक धरोहरों का निर्माण हुआ था। मणिकर्णिका घाट काशी के 84 प्रमुख घाटों में से एक है और इसका धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व अत्यंत अधिक है।

इंदौर में रणनीति तैयार, कल बड़ी बैठक इस घटना की खबर मिलते ही इंदौर में अहिल्या प्रेमी और विभिन्न समाजों के लोग लामबंद हो गए हैं। स्थानीय संगठनों का कहना है कि विकास के नाम पर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को मिटाया जाना असहनीय है। बैठक का आयोजनः कल (15 जनवरी) धनगर समाज, पाल, बघेल सहित करीब 15 समाजों की एक बड़ी बैठक बुलाई गई है। विरोध की रणनीतिः इस बैठक में प्रशासन के इस कदम के खिलाफ आंदोलन और विरोध प्रदर्शन की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

खासगी ट्रस्ट ने उठाए सवाल खासगी देवी अहिल्याबाई होलकर चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष यशवंतराव होलकर ने कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि विकास कार्य जरूरी हैं, लेकिन उन्हें विरासत को सुरक्षित रखते हुए किया जाना चाहिए। उन्होंने मांग की है किः मुख्यमंत्रीयोगीआदित्यनाथइसलापरवाहीकीजांचकराएं। दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए। क्षतिग्रस्त मूर्तियों और धरोहरों को सम्मान के साथ पुनः स्थापित किया जाए।

इंदौर निगम की गौशाला पर गंभीर सवाल

अंदर से खुला मौतों का राज, बाबा का दावा-रोज़ 10 से 12 गायें दम तोड़ रहीं

इंदौर। नगर निगम द्वारा संचालित गौशाला एक बार फिर विवादों के घेरे में आ गई है। कांग्रेस के आरोपों के बीच अब गौशाला के भीतर से ही ऐसा बयान सामने आया है, जिसने प्रशासन और नगर निगम की व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। गौशाला की देखरेख कर रहे अच्युतानंद महाराज ने एक मीडिया बातचीत में सनसनीखेज दावा करते हुए कहा है कि गौशाला में हर दिन दस से बारह गायों की मौत हो रही है। उनका कहना है कि यह किसी एक-दो दिन की बात नहीं, बल्कि लगातार चल रही व्यवस्था की नाकामी का परिणाम है। अच्युतानंद महाराज ने बताया कि रोज़ाना बड़ी संख्या में गायों को गंभीर हालत में गौशाला लाया जाता है। इनमें अधिकांश गायें सड़क दुर्घटनाओं में घायल होती हैं या फिर प्लास्टिक और कचरा खाने के कारण गंभीर रूप से बीमार होती हैं। उन्होंने कहा कि कई बार गायों की हालत इतनी खराब

होती है कि इलाज शुरू करने से पहले ही उनकी मौत हो जाती है। हालात इतने चिंताजनक हैं कि कई बार दस में से सिर्फ दो गायों को ही बचा पाना संभव हो पाता है, इसके बावजूद गौशाला का स्टाफ लगातार इलाज और देखरेख में जुटा रहता है।

इस पूरे मामले ने तब और तूल पकड़ लिया जब कांग्रेस ने पहले ही गौशाला का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा कर मुख्यमंत्री से जांच की मांग की थी। कांग्रेस का आरोप था कि गौशाला में गायों की मौत भूख, ठंड और अव्यवस्था के कारण हो रही है। इन आरोपों के बाद मौके पर पहुंचे मीडिया दल ने जब जमीनी हकीकत का जायजा लिया, तो हालात वाकई गंभीर नजर आए। गौशाला में तैनात पशु चिकित्सक श्वेता ने बताया कि उनकी नियुक्ति पशु चिकित्सा महाविद्यालय के माध्यम से हुई है और वह रोज़ाना ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करती हैं। उन्होंने कहा कि बीमार गायों का इलाज किया जा रहा है, लेकिन जिस हालत में उन्हें गौशाला लाया जाता है, वह पूरे तंत्र पर सवाल खड़े करता है। डॉक्टर के अनुसार इलाज की कोशिश हर स्तर पर की जाती है, लेकिन देर से पहुंचने वाली और अत्यधिक बीमार गायों को बचा पाना कई बार संभव नहीं हो पाता। वहीं इस मुद्दे पर कांग्रेस के पूर्व महासचिव राकेश सिंह यादव ने प्रशासन पर सीधा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि अगर रोज़ दस से बारह सड़क दुर्घटनाओं में घायल गायें गौशाला पहुंच रही हैं, तो यह साफ संकेत है कि शहर की सड़कों पर आवारा मवेशियों को लेकर कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि नगर निगम और प्रशासन की लापरवाही का खामियाजा बेजुबान जानवरों को अपनी जान देकर चुकाना पड़ रहा है। गौशाला से सामने आए इन खुलासों के बाद इंदौर नगर निगम की कार्यप्रणाली एक बार फिर सवालों के घेरे में है। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इन आरोपों को कितनी गंभीरता से लेता है और क्या वास्तव में गौशाला और सड़कों पर आवारा मवेशियों की समस्या को लेकर कोई ठोस कदम उठाया जाता है या फिर यह मामला भी अन्य विवादों की तरह फाइलों में दबकर रह जाएगा।

इंदौर हाईकोर्ट भड़का

बीआरटीएस हटाने में देरी और अधिकारियों की बहानेबाजी पर सख्त कार्रवाई का ऐलान

- पीडब्ल्यूडी के चीफ इंजीनियर समेत कई अधिकारियों को तलब

इंदौर। शहर के बीआरटीएस कॉरिडोर को हटाने के मामले में पिछले एक साल से फाइलें और बहाने ही चल रहे थे, जिस पर सोमवार को इंदौर हाईकोर्ट का गुस्सा फूट पड़ा। जस्टिस विजय कुमार शुक्ला और जस्टिस आलोक अवस्थी की डबल बेंच ने साफ कहा कि प्रशासन इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रहा है और अब इसे टालमटोल करने की छूट नहीं दी जाएगी। सुनवाई के दौरान अधिकारियों से पूछा गया कि काम क्यों रुका हुआ है, तो उन्होंने बार-बार वही पुराना बहाना दोहराया कि ठेकेदार ने काम छोड़ दिया है। वरिष्ठ अधिवक्ता अजय बागड़िया ने इस पर आपत्ति जताई और कहा कि हर बार ठेकेदार को दोषी ठहराना प्रशासन का बहाना बन गया है। हाईकोर्ट ने अब सख्ती दिखाते हुए अगली सुनवाई यानी 19 जनवरी को कलेक्टर, नगर निगम आयुक्त, ट्रैफिक डीसीपी के साथ-साथ पीडब्ल्यूडी के चीफ इंजीनियर, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर और संबंधित ठेकेदार को व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में उपस्थित होने का आदेश दिया है।

कोर्ट ने ट्रैफिक डीसीपी की सुस्त कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताई कि एक महीने बाद भी नोडल अधिकारी की नियुक्ति की जानकारी कोर्ट द्वारा गठित कमेटी को नहीं दी गई। कोर्ट ने इसे 'लालफीताशाही' करार दिया और कहा कि अधिकारी केवल एक-दूसरे के पाले में जिम्मेदारी डाल रहे हैं। इसके अलावा शहर में ट्रैफिक बाधित करने वाले अवैध धार्मिक अतिक्रमण और ध्वनि प्रदूषण को लेकर भी कोर्ट ने कलेक्टर को फटकार लगाई। प्रशासन ने केवल चार अतिक्रमण की रिपोर्ट पेश की, जिस पर कोर्ट ने आश्चर्य व्यक्त किया। अधिवक्ता बागड़िया ने कहा कि पूरे शहर का सर्वे होना चाहिए था, लेकिन प्रशासन ने केवल बीआरटीएस मार्ग की जानकारी दी। कोर्ट ने स्पष्ट आदेश दिया कि अगले दो सप्ताह के भीतर पूरे शहर के अवैध धार्मिक स्थलों और अवैध लाउडस्पीकर के मामले की एक्शन रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। इंदौर के बिगड़ते ट्रैफिक की स्थिति को देखते हुए हाईकोर्ट ने 2019 के अपने पुराने आदेश को याद दिलाया। कोर्ट ने कहा कि शहर की सभी ट्रैफिक लाइटें 24 घंटे चालू रहनी चाहिए और बिजली जाने की स्थिति में बैटरी बैकअप की अनिवार्य व्यवस्था हो। प्रशासन को अगली सुनवाई में यह स्पष्ट करना होगा कि इस पर ठोस कदम उठाए जा रहे हैं या नहीं। यह कदम हाईकोर्ट की ओर से शहर में ट्रैफिक सुधार, अवैध अतिक्रमण और नगर प्रशासन की सुस्त कार्यप्रणाली पर कड़ा संदेश है। अब यह देखना होगा कि प्रशासन अगले आदेश तक कितनी तत्परता दिखाता है और बीआरटीएस हटाने के लंबे टालमटोल को वास्तविक कार्यवाही में बदल पाता है।

भागीरथपुरा क्षेत्र में 'अभियान स्वास्थ्यवर्धन' जारी, स्वास्थ्य जांच और उपचार कार्य प्रभावी रूप से संचालित

इंदौर। भागीरथपुरा क्षेत्र में चल रहे 'अभियान स्वास्थ्यवर्धन' के अंतर्गत मंगलवार को 50 दलों द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में सर्वे किया गया, जिसमें 187 सदस्यों ने भाग लिया।
अभियान के दौरान महिलाओं एवं बच्चों की विशेष रूप से स्वास्थ्य जांच की गई।
रक्तचाप, शुगर और एनीमिया की जांच भी की गई। बीते तीन दिनों में कुल 16,208 लोगों की जांच की जा चुकी है, जिनमें 278 लोगों में उच्च रक्तचाप और 161 लोगों में मधुमेह की पहचान की गई। इन सभी को हेल्थ कार्ड प्रदान कर आगे की जांच और उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्रों में जाने की सलाह दी गई।
भागीरथपुरा क्षेत्र में मंगलवार को आयोजित ओपीडी में 109 मरीज पहुंचे, जिनमें से 5 मरीज डायरिया से पीड़ित पाए गए। किसी भी मरीज को रेफर नहीं किया गया। क्षेत्र के निवासियों को हेल्थ कार्ड वितरित किए गए, जिनमें उनके स्वास्थ्य सूचकांकों की जानकारी दी गई है। आशा कार्यकर्ताओं द्वारा लोगों को पानी उबालकर पीने और चल रहे उपचार की दवाइयों का पूरा डोज लेने के लिए जागरूक किया गया।
कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देशानुसार क्षेत्र में 24म7 चिकित्सकीय सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं तथा 2 एंबुलेंस तैनात की गई हैं। गंभीर मरीजों को एम. वाय. अस्पताल, अरविंदो अस्पताल एवं बच्चों को चाचा नेहरू अस्पताल में रेफर किया जा रहा है। जो मरीज निजी अस्पतालों में उपचार ले रहे हैं, वहां भी निःशुल्क जांच, उपचार एवं औषधि उपलब्ध कराने के निर्देश मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. माधव प्रसाद हासानी द्वारा दिए गए हैं।
अभियान के अंतर्गत उपचार, परामर्श एवं जांच से लोगों में सुरक्षा और संतुष्टि की भावना देखने को मिली है। नागरिकों ने बताया कि हेल्थ कार्ड के माध्यम से उन्हें अपने स्वास्थ्य स्तर और आवश्यक जीवनशैली में सुधार की स्पष्ट जानकारी मिल रही है, जिससे स्वयं, परिवार और समुदाय को स्वस्थ रखने में सहायता मिल रही है।
मंगलवार शाम तक की स्थिति अनुसार अस्पतालों में कुल 436 मरीज भर्ती हुए, जिनमें से 403 मरीजों को डिस्चार्ज किया जा चुका है। वर्तमान में 33 मरीज भर्ती हैं, जिनमें से 8 मरीज आईसीयू में उपचाररत हैं। मरीजों के परिवहन के लिए 2 एंबुलेंस लगातार सेवाएं दे रही हैं।

मकर संक्रांति पर जरूर करें तुलादान

मकर संक्रांति पर स्नान और पूजा-पाठ के साथ ही दान का भी विशेष महत्व है. लेकिन इस दिन तुलादान का सबसे अधिक महत्व है और इससे पुण्य मिलता है.

मकर संक्रांति हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में एक है. सूर्य देव जब धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तब मकर संक्रांति मनाई जाती है. मकर संक्रांति को खिचड़ी, पोंगल, संक्रांति, माघी और उत्तरायण आदि जैसे नामों से भी जाना जाता है. इस साल 2024 में मकर संक्रांति सोमवार 15 जनवरी को है. मकर संक्रांति के दिन लोग पवित्र नदी में स्नान करते हैं, सामर्थ्यनुसार दान देते हैं, सूर्य उपासना करते हैं और पूजा-पाठ आदि का करते हैं. इस दिन खिचड़ी खाने और दान करने का भी महत्व है. लेकिन इसी के साथ मकर संक्रांति पर तुलादान का भी विशेष महत्व है. ऐसी मान्यता है कि, मकर संक्रांति पर किए तुलादान से बहुत लाभ होता है, इससे कई गुणा पुण्यफल मिलते हैं, संकटों से मुक्ति मिलती है और मोक्ष की भी प्राप्ति होती है. लेकिन सबसे पहले जानते हैं आखिर क्या है तुलादान. साथ ही इसके महत्व और नियम के बारे में.

तुलादान क्या है

हिंदू धर्म में वैसे तो दान को बहुत ही पुण्य कार्य माना गया है, जिससे ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं. दान जीवनकाल में किया गया ऐसा पुण्यकर्म है, जिसका फल मरणोपरांत भी मिलता है. लेकिन सभी दानों में तुलादान को पुण्य दिलाने वाला दान माना जाता है. तुलादान ऐसे दान को कहते हैं, जो व्यक्ति के भार के अनुसार दिया जाता है. तुलादान में आपको स्वयं या जिसके लिए भी आपको दान करना है, उसके वजन के बराबर अनाज का दान किसी जरूरतमंद को कर दें.

तुलादान के नियम

- तुलादान करते समय इस बात का ध्यान रखें कि, यह दान किसी ऐसे व्यक्ति को ही दें, जो असहाय या जरूरतमंद हो. कभी भी अघाये हुए हो तुलादान न करें, वरना इसका फल नहीं मिलता.
- मकर संक्रांति पर स्नान के बाद ही तुलादान करें. बिना स्नान किए किसी भी प्रकार का दान नहीं करना चाहिए.
- तुलादान यदि शुक्ल पक्ष के रविवार को किया जाए तो सबसे उत्तम माना जाता है.
- मकर संक्रांति पर दान का विशेष महत्व होता है. ऐसे में इस दिन किए तुलादान का महत्व और अधिक बढ़ जाता है.
- तुलादान में आप अनाज, नवग्रह से जुड़ी चीजें या सतनाज जैसे (गेहूं, चावल, दाल, मक्का, ज्वार, बाजरा, सावुत चना) का दान कर सकते हैं.

तुलादान की परंपरा की शुरुआत कैसे हुई

पौराणिक मान्यता के अनुसार, विष्णुजी के कहने पर ब्रह्मा जी द्वारा तुलादान को तीर्थों का महत्व तय करने के लिए कराया था. इसके साथ ही तुलादान को लेकर भगवान कृष्ण से जुड़ी एक धार्मिक व पौराणिक कथा खूब प्रचलित है, जिसके अनुसार- एक बार श्रीकृष्ण पर अपना एकाधिकार जमाने के लिए सत्यभामा ने उन्हें नारद मुनि को दान दे दिया. इसके बाद नारद मुनि कृष्ण को लेकर जाने लगे. इसके बाद सत्यभामा को अपनी भूल का एहसास हुआ. लेकिन सत्यभामा के पास कोई कृष्ण को रोकने का रोई विकल्प भी नहीं था, क्योंकि वह तो पहले ही नारद मुनि को कृष्ण का दान कर चुकी थी. तब कृष्ण को दुबारा प्राप्त करे के लिए सत्यभामा ने नारद मुनि से इसके उपाय के बारे में पूछा. नारद मुनि ने सत्यभामा से कहा कि वह, भगवान कृष्ण का तुलादान कर दे. इसके बाद एक तराजू लाई गई. तराजू के एक ओर श्रीकृष्ण बैठ गए और दूसरी ओर स्वर्ण-मुद्राएं, आभूषण, अन्न आदि रखे गए. लेकिन इतना सबकुछ रखने के बाद भी कृष्ण की ओर का पलड़ा नहीं तक हिला. ऐसे में रुक्मणी ने सत्यभामा को दान वाले पलड़े में एक तुलसी का पत्ता रखने को कहा. जैसे ही सत्यभामा ने दान वाले पलड़े में तुलसी का पत्ता रखा तो तराजू के दोनों पलड़े बराबर हो गए. इस समय श्रीकृष्ण ने ही तुलादान के महत्व के बारे में बताया था.

गीता में लिखे हैं मकर संक्रांति के 3 रहस्य

सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करने को संक्रांति कहते हैं। वर्ष में 12 संक्रांतियां होती है जिसमें से 4 संक्रांति मेष, तुला, कर्क और मकर संक्रांति ही प्रमुख मानी गई हैं। मकर संक्रांति के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है इसीलिए इसे मकर संक्रांति कहते हैं। गीता में इसका क्या महत्व है जानिए 3 रहस्य।

- **उत्तरायण में शरीर त्यागने से नहीं होता है पुनर्जन्म :** मकर संक्रांति के दिन सूर्य उत्तरायण होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने उत्तरायन का महत्व बताते हुए गीता में कहा है कि उत्तरायन के 6 मास के शुभ काल में, जब सूर्य देव उत्तरायन होते हैं और पृथ्वी प्रकाशमय रहती है, तो इस प्रकाश में शरीर का परित्याग करने से व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता, ऐसे लोग ब्रह्म को प्राप्त हैं। इसके विपरीत सूर्य के दक्षिणायण होने पर पृथ्वी अंधकारमय होती है और इस अंधकार में शरीर त्याग करने पर पुन : जन्म लेना पड़ता है। यही कारण था कि भीष्म पितामह ने शरीर तब तक नहीं त्यागा था, जब तक कि सूर्य उत्तरायन नहीं हो गया। माना जाता है कि उत्तरायण में शरीर का परित्याग करने से व्यक्ति को सद्गति मिलती है।
- **देवताओं का दिन प्रारंभ :** हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार मकर संक्रांति से देवताओं का दिन आरंभ होता है, जो आषाढ़ मास तक रहता है। कर्क संक्रांति से देवताओं की रात प्रारंभ होती है। अर्थात देवताओं के एक दिन और रात को मिलाकर मनुष्य का एक वर्ष होता है। मनुष्यों का एक माह पितरों का एक दिन होता है। उनका दिन शुक्ल पक्ष और रात कृष्ण पक्ष होती है।
- **दो मार्ग का वर्णन :** जगत में दो मार्ग है शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। देवयान और पितृयान। देवयान में ज्योतिर्मय अग्नि-अभिमानी देवता हैं, दिन का अभिमानी देवता है, शुक्ल पक्ष का अभिमानी देवता है और उत्तरायण के छ : महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गए हुए ब्रह्मवेत्ता योगीजन उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले जाए जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। पितृयान में धूमाभिमानी देवता है, रात्रि अभिमानी देवता है तथा कृष्ण पक्ष का अभिमानी देवता है और दक्षिणायन के छ : महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गया हुआ सकाम कर्म करने वाला योगी उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले गया हुआ चंद्रमा की ज्योत को प्राप्त होकर स्वर्ग में अपने शुभ कर्मों का फल भोगकर वापस आता है।लेकिन जिनके शुभकर्म नहीं हैं वे उक्त दोनों मार्गों में गमन नहीं करके अधोयोनि में गिर जाते हैं।

संक्रांति पर इन मंत्रों से करें पूजन

पौराणिक शास्त्रों के अनुसार सूर्यदेव सृष्टि के महत्वपूर्ण आधार हैं। सूर्य की उपासना वैदिक काल से चली आ रही है। सूर्यदेव ज्ञान, आध्यात्म और प्रकाश के प्रतीक माने जाते हैं और मकर संक्रांति भगवान सूर्यदेव का त्योहार है। वर्ष 2026 में मकर संक्राति का त्योहार 14 जनवरी को मनाया जा रहा है। इस दिन सूर्यदेव दक्षिण की यात्रा समाप्त करके उत्तर दिशा की तरफ बढ़ते हैं यानी मकर संक्रांति के दिन सूर्य उत्तरायन हो जाते हैं। भगवान सूर्यदेव के उदय होते ही पूरी दुनिया का अंधकार नष्ट होकर चारों ओर प्रकाश फैल जाता है। मकर संक्रांति का पर्व किसानों का मुख्य त्योहार माना गया है, क्योंकि सूर्यदेव की कृपा से फसल का उत्पादन होता है। हिन्दू धर्म के अनुसार जब सूर्य का मकर राशि में प्रवेश होता है तब यह मकर संक्रांति कहलाता है। सूर्य अर्घ्य देने के नियम-

- प्रात :काल सूर्योदय से पूर्व शुद्ध होकर स्नान करें।
- तत्पश्चात उदित होते सूर्य के समक्ष कुश का आसन लगाएं।
- आसन पर खड़े होकर तांबे के पात्र में पवित्र जल लें।
- उसी जल में मिश्री भी मिलाएं। मान्यतानुसार सूर्य को मीठा जल चढ़ाने से जन्मकुंडली के दूषित मंगल का उपचार होता है।
- मंगल शुभ हो तब उसकी शुभता में वृद्दि होती है।
- जैसे ही पूर्व दिशा में सूर्यागमन से पहले नारंगी किरणें प्रस्फूटित होती दिखाई दें, आप दोनों हाथों से तांबे के पात्र को पकड़ कर इस तरह जल चढ़ाएं कि सूर्य जल चढ़ाती धार से दिखाई दें।
- सूर्य को जल धीमे-धीमे इस तरह चढ़ाएं कि जलधारा आसन पर आ गिरे ना कि जमीन पर।
- जमीन पर जलधारा गिरने से जल में समाहित सूर्य-ऊर्जा धरती में चली जाएगी और सूर्य अर्घ्य का संपूर्ण लाभ आप नहीं पा सकेंगे।
- अर्घ्य देते समय यह मंत्र 11 बार पढ़ें- ऊँ ऐहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजोराशे जगत्पते। अनुकंपये माम भक्त्या गृहणार्घ्यं दिवाकर : ।।'
- फिर यह मंत्र 3 बार पढ़ें- ऊँ ह्रीं ह्रीं सूर्याय, सहस्त्रकिरणाय। मनोवांछित फलं देहि देहि स्वाहा : ।।'
- तत्पश्चात सीधे हाथ की अंजूरी में जल लेकर अपने चारों ओर छिड़कें।
- अपने स्थान पर ही 3 बार घूम कर परिक्रमा करें।
- आसन उठाकर उस स्थान को नमन करें।
- इसके अलावा सूर्यदेव को अर्घ्य देते समय तांबे के लोटे में जल लेकर उसमें रोली, चंदन, लाल पुष्प डालना चाहिए तथा चावल अर्पित करके गुड़ चढ़ाना चाहिए। इससे सूर्यदेव की कृपा प्राप्त होती है।

सूर्य पूजा का खास महत्व

- रामायण काल से ही भारतीय संस्कृति में दैनिक सूर्य पूजा का प्रचलन चला आ रहा है। रामकथा में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा नित्य सूर्य पूजा का उल्लेख मिलता है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य की विशेष आराधना होती है।
- सूर्य के उत्तरायण होने के बाद से देवों की ब्रह्म मुहूर्त उपासना का पुण्यकाल प्रारंभ हो जाता है। इस काल को ही परा-अपरा विद्या की प्राप्ति का काल कहा जाता है। इसे साधना का सिद्धिकाल भी कहा गया है।
- सूर्य संस्कृति में मकर संक्रांति का पर्व ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, आद्यशक्ति और सूर्य की आराधना एवं उपासना का पावन व्रत है, जो तन-मन-आत्मा को शक्ति प्रदान करता है।

भारत के खिलाफ खेलेंगी आखिरी मैच

नई दिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया की कप्तान और आठ वर्ल्ड कप खिताब के साथ अब तक की सबसे सफल खिलाड़ियों में से एक एलिसा हीली फरवरी-मार्च 2026 में भारत के खिलाफ मल्टी-फॉर्मेट सीरीज के बाद क्रिकेट से संन्यास ले लेंगी। हीली को 2023 के आखिर में मेग लैनिंग की जगह फुल टाइम कप्तान बनाया गया था। वह भारत के खिलाफ टी20 सीरीज में नहीं खेलेंगी ताकि ऑस्ट्रेलिया साल के आखिर में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप के लिए तैयारी शुरू कर सके, लेकिन वह वनडे मैच खेलेंगी और फिर 6-9 मार्च को वाका में होने वाले डे-नाइट मैच में अपने 11वें टेस्ट मैच के साथ अपने करियर का अंत करेंगी। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान हीली ने संन्यास का ऐलान करते हुआ कहा कि पिछले कुछ महीने मानसिक रूप से बहुत थकाने वाले रहे हैं क्योंकि उन्हें चोटों से जूझना पड़ा। इस

साल के आखिर में इंग्लैंड में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप में न खेलने का फैसला करने के बाद उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के लिए 'सबसे बड़ी सीरीज' में से एक के बाद रिटायर होने का फैसला किया है।

पॉडकास्ट में किया संन्यास का ऐलान- हीली ने विलोटॉक क्रिकेट पॉडकास्ट पर कहा, 'मैं इसे पॉडकास्ट के लिए बचाकर रखना चाहती थी क्योंकि पिछले कुछ समय में यह मेरे लिए काफी मजेदार रहा है जिसका मैं हिस्सा रही हूं। आधिकारिक तौर पर आज जब आप यह सुन रहे हैं तो मैं भारत के खिलाफ सीरीज के आखिर में क्रिकेट से रिटायर हो रही हूं। प्लीज मुझे रुलाओ मत। यह आसान फैसला नहीं था, लेकिन कभी न कभी तो लेना ही था।'

स्टार्क को गोल्फ में हराने के लिए संन्यास

हीली ने मजाक में कहा कि उन्होंने क्रिकेट छोड़ने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उनके पति और ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने हाल ही में गोल्फ में एक स्ट्रोक में होल किया तो उनको लगा कि उन्हें हराने के लिए इस खेल को फुल टाइम अपनाना होगा। हीली ने आगे मानसिक थकान के बारे में विस्तार से बताया जो हाल ही में उन्हें महसूस हो रही थी।

हीली का करियर

भारत का ऑस्ट्रेलिया दौरा 15 फरवरी को तीन टी20 मैचों से शुरू होगा। इसके बाद तीन वनडे और फिर पर्थ के वाका में टेस्ट मैच होगा, जो हीली के शानदार करियर का आखिरी मैच होगा। हीली ने अबतक 123 वनडे खेले हैं जिसमें 7 शतक के साथ 3563 रन बनाए हैं और 162 टी20 में एक शतक के साथ 3054 रन बनाए हैं। उन्होंने 10 टेस्ट मैच भी खेले हैं। सबसे खास बात यह है कि वह 2020 टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में प्लेयर ऑफ द मैच थीं, जब ऑस्ट्रेलिया ने भारत को हराया था। 2022 वनडे वर्ल्ड कप में भी वह प्लेयर ऑफ द मैच थीं जब उन्होंने इंग्लैंड को हराया था।

टी20 विश्व कप : बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड अपनी बात पर अड़ा

भारत में खेलने से किया इनकार

नई दिल्ली। आईसीसी पुरुष टी20 वर्ल्ड कप 2026 को लेकर बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड और इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल के बीच तनाव बढ़ता नजर आ रहा है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड अपनी बात पर अड़ा हुआ है और सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए भारत में अपने मैच खेलने को लेकर फिर से इनकार कर दिया है। इस मुद्दे पर दोनों संस्थाओं के बीच उच्चस्तरीय बातचीत हुई, लेकिन फिलहाल बांग्लादेश ने अपने रुख में कोई बदलाव नहीं किया है। आने वाले दिनों में यह विवाद टूर्नामेंट की योजना पर बड़ा असर डाल सकता है। मंगलवार दोपहर बीसीबी और आईसीसी के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच एक वीडियो कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई, जिसमें टी20 वर्ल्ड कप 2026 में बांग्लादेश की भागीदारी पर चर्चा हुई। बैठक में बीसीबी अध्यक्ष अमीनुल इस्लाम, उपाध्यक्ष शकावत हुसैन और फारूक अहमद, क्रिकेट ऑपरेशंस कमेटी के चेयरमैन नजमुल आबेदीन और सीईओ निजामुद्दीन चौधरी शामिल रहे।

भारत न जाने के फैसले पर बीसीबी कायम

इस बैठक में बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने स्पष्ट किया कि वह सुरक्षा चिंताओं के चलते भारत में खेलने के फैसले पर पुनर्विचार नहीं करेगा। बीसीबी ने आईसीसी से अनुरोध किया कि बांग्लादेश के मैच भारत के बाहर किसी अन्य देश में आयोजित करने पर विचार किया जाए। हालांकि आईसीसी ने यह कहते हुए असमर्थता जताई कि टूर्नामेंट का शेड्यूल पहले ही जारी किया जा चुका है।

आईसीसी की सुरक्षा रिपोर्ट और बीसीबी की आपत्ति

आईसीसी की ओर से बताया गया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सुरक्षा विशेषज्ञों द्वारा किए गए जोखिम आकलन में भारत में टूर्नामेंट के लिए खतरे को कम से मध्यम श्रेणी में रखा गया है। आईसीसी सूत्रों के अनुसार, यह जोखिम स्तर अन्य बड़े वैश्विक खेल आयोजनों के समान है और बांग्लादेश के लिए कोई विशेष खतरा नहीं दर्शाता।

बांग्लादेश सरकार की कड़ी प्रतिक्रिया

इससे पहले बांग्लादेश के युवा और खेल सलाहकार आसिफ नजरुल ने दावा किया था कि भारत में टी20 वर्ल्ड कप खेलने का 'माहौल नहीं है।' उन्होंने आईसीसी की सुरक्षा टीम के एक कथित पत्र का हवाला देते हुए कहा कि बांग्लादेशी खिलाड़ियों और समर्थकों को भारत में गंभीर सुरक्षा जोखिम हो सकता है।

गौतम गंभीर कर रहे हैं पक्षपात?

- आयुष बदोनी के सेलेक्शन पर लगी सवालों की झड़ी...

नई दिल्ली, एजेंसी। टीम इंडिया में यंग ऑलराउंडर आयुष बदोनी की एंट्री हुई है, वो न्यूजीलैंड के खिलाफ बाकी दो वनडे मैचों में चुने गए हैं. उनका पहली बार टीम इंडिया में सेलेक्शन हुआ है. लेकिन उनकी इस एंट्री के साथ ही हेड कोच गौतम गंभीर पर पक्षपात के आरोप लगने लगे हैं.

सोशल मीडिया पर फैन्स सवाल उठा रहे हैं कि क्या बदोनी वाकई इस चयन के हकदार थे या फिर यह गंभीर की निजी पसंद का नतीजा है. दरअसल, ऑलराउंडर वॉशिंगटन सुंदर पहले वनडे में गेंदबाजी के दौरान बाएं निचले पसली हिस्से में दर्द की शिकायत के बाद सीरीज से बाहर हो गए. उनकी जगह टीम मैनेजमेंट ने आयुष बदोनी को स्क्वॉड में शामिल किया. इसके बाद से ही सेलेक्शन को लेकर बहस छिड़ गई. फैन्स का गुस्सा इसलिए भी बढ़ा है, क्योंकि लिस्ट ए क्रिकेट में बदोनी के आंकड़े कुछ खास प्रभावशाली नहीं रहे हैं. उन्होंने अब तक 22 पारियों में 693 रन बनाए हैं, जिसमें उनका एवरेज 36.47 का है.

विजय हजारे ट्रॉफी में फ्लॉप बदोनी

मौजूदा विजय हजारे ट्रॉफी 2025-26 में भी 26 साल के बदोनी का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है. उन्होंने तीन पारियों में सिर्फ 16 रन बनाए हैं, एवरेज मात्र 8 का रहा. इसी वजह से फैन्स सेलेक्शन पर सवाल उठा रहे हैं.

शिखर धवन ने गर्लफ्रेंड से सगाई की: सोफी शाइन अमेरिकी कंपनी में वाइस

नई दिल्ली, एजेंसी। टीम इंडिया के पूर्व ओपनर शिखर धवन ने सोमवार को गर्लफ्रेंड सोफी शाइन के साथ सगाई की घोषणा की। धवन ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर कर इसकी जानकारी दी। दोनों पिछले कुछ समय से रिलेशनशिप में थे और मई 2025 में अपने रिश्ते को सार्वजनिक किया था। पिछले साल धवन और सोफी को दुबई में चैंपियंस ट्रॉफी मैच के दौरान साथ देखा गया था। इसके अलावा दोनों एक मीडिया कॉन्क्लेव में भी नजर आए थे, जहां धवन ने इशारों में दोबारा प्यार मिलने की बात कही थी। शिखर के पंजाब किंग्स के लिए खेलने के दौरान भी सोफी टीम को सपोर्ट करती नजर आई थीं। धवन ने इंस्टाग्राम पर लिखा- मुस्कान से लेकर सपनों तक, सब कुछ साझा करते हुए। हमारी सगाई के लिए मिले प्यार, आशीर्वाद और शुभकामनाओं के लिए आभारी हूं। हम हमेशा के लिए एक-दूसरे का साथ चुन रहे हैं।

कौन हैं सोफी शाइन?

सोफी शाइन आयरलैंड की रहने वाली हैं। जब वह धवन से मिली थी तब वे में जॉब करती थी। उनके लिंक्डइन प्रोफाइल के मुताबिक वह अमेरिका की फाइनेंशियल सर्विस कंपनी नॉर्दर्न ट्रस्ट कॉरपोरेशन में सेकेंड वाइस प्रेसिडेंट (प्रोडक्ट कंसल्टेंट) के पद पर कार्यरत रही हैं। मीडियो रिपोर्ट के मुताबिक सोफी पिछले साल जुलाई से धवन की स्पोर्ट्स कंपनी डा वन स्पोर्ट्स की चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर)हैं। उन्होंने आयरलैंड के लिमरिक इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से मार्केटिंग और मैनेजमेंट की पढ़ाई की है। शुरुआती शिक्षा उन्होंने कैसलरॉय कॉलेज से पूरी की। सोफी, धवन के इंस्टाग्राम पर आने वाले कई मजेदार वीडियो में भी नजर आती रहती हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों की मुलाकात यूएई में हुई थी।

पलकों पे उन मुद्दों को सामने लाती है, जिनसे समाज अक्सर आंखें मूंद लेता है

समाज को आईने की तरह दिखाने वाली फिल्मों की एक अलग ही अहमियत होती है। ऐसी फिल्मों में केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि समाज के उन मुद्दों को सामने लाने की हिम्मत होती है, जिन पर आम तौर पर लोग चुप रहते हैं। अभिनेत्री श्वेता त्रिपाठी अपनी आने वाली फिल्म पलकों पे के जरिए इन संवेदनशील मुद्दों को सामने ला रही हैं।

आईएएनएस से बात करते हुए श्वेता त्रिपाठी ने शूटिंग के अनुभव को साझा किया और उसे चुनौतीपूर्ण बताया। उन्होंने कहा, शूटिंग लगातार कई दिनों तक चली। यह लंबा शेड्यूल था। इस थकान भरे सफर ने पूरी टीम को और करीब ला दिया। कलाकारों और तकनीकी टीम के बीच जो समझ और भरोसा बना, वह फिल्म में दिखाई देगा। शूटिंग के दौरान एक-दूसरे की मदद करना सभी के लिए एक नई ऊर्जा बन गया। पलकों पे को लेकर श्वेता ने कहा, मुझे फिल्म की कहानी ने सबसे ज्यादा आकर्षित किया। फिल्म उन सवालों का सामना करती है जिनसे समाज अक्सर आंखें मूंद लेता है। तलाक, लैंगिक समानता, यौन पहचान और मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दे इस फिल्म में सीधे और ईमानदारी से उठाए गए हैं। ये वे विषय हैं जिन पर लोग आमतौर पर बात करना पसंद नहीं करते। इस फिल्म में बिना झिझक इन मुद्दों को प्रभावशाली तरीके से पेश किया गया है। उन्होंने कहा, फिल्म के निर्देशक निधिश पुझक्कल ने इसे और भी खास बनाया है। उनका अंदाज अलग है। वह हर सीन, हर खामोशी और हर भावना को एक मनोवैज्ञानिक नजरिए से देखते हैं। ऐसे निर्देशन में काम करना एक अभिनेता का सपना होता है।

स्पेस टेक नीति-2026 को एमपी कैबिनेट की मंजूरी

शिक्षकों के लिए चतुर्थ क्रमोन्नत वेतनमान योजना लागू

800 मेगावाट सोलर परियोजनाओं पर भी लग गई मुहर

भोपाल। मोहन यादव सरकार ने आज स्पेस टेक नीति-2026 को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही सोलर एनर्जी को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 800 मेगावाट बिजली से संबंधित तीन एजेंडों को मंजूरी दी है। इनमें सोलर सह 4 घंटे की 300 मेगावाट विद्युत प्रदाय स्टोरेज परियोजना, सोलर सह 6 घंटे की 300 मेगावाट विद्युत प्रदाय स्टोरेज परियोजना और 24 घंटे की 200 मेगावाट सोलर सह स्टोरेज परियोजना की स्थापना शामिल है। उधर, कैबिनेट ने एक बार फिर इंदौर नगर के मध्य स्थित जामा मस्जिद के नमाजियों और क्षेत्र के नागरिकों के लिए चिकित्सालय, वाचनालय, उद्यान, कम्युनिटी हॉल और

विद्यालय बनाने के लिए भूमि आवंटन से जुड़े दिग्विजय सरकार के फैसले पर पुनर्विचार के लिए एजेंडा लाया है। यह एजेंडा पिछले माह भी कैबिनेट में आ चुका था लेकिन ऐन मौके पर इसे डिफर कर दिया गया था। यह एजेंडा दिग्विजय सरकार के 27 सितम्बर 2003 के फैसले पर पुनर्विचार के लिए लाया गया। हालांकि इस पर फैसले के बारे में जानकारी नहीं दी गई। कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते हुए डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने बताया कि स्पेस टेक नीति को मंजूरी दिए जाने से स्थानीय स्तर पर उपग्रह निर्माण को लेकर कवायद होगी और पांच साल में इसमें एक हजार करोड़ रुपए का निवेश आएगा। इस नीति से 8 हजार रोजगार सृजन की भी बात कही गई है। इससे पहले ब्रीफिंग के लिए ऐन वक्त पर मंत्री का चेंबर बदला दिया गया। मंत्रि-परिषद द्वारा द्वितीय चरण के लिए 200 सर्वसुविधा युक्त सांदीपनि विद्यालय की स्थापना के लिए अनुमानित व्यय 3 हजार 660 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई। द्वितीय चरण के प्रस्तावित विद्यालयों की क्षमता एक हजार से अधिक होगी।

ग्वालियर व्यापार मेले में ऑटोमोबाइल पर छूट

मंत्रि-परिषद द्वारा ग्वालियर व्यापार मेला-2026 एवं उज्जैन विक्रमोत्सव व्यापार मेला 2026 में ऑटोमोबाइल विक्रय पर मोटरयान कर में 50 प्रतिशत छूट दिये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तीन सोलर सह स्टोरेज प्रदाय परियोजना की स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वीकृति अनुसार रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर लिमिटेड द्वारा विकसित की जा रही परियोजना के अंतर्गत सोलर-सह चार घंटे 300 मेगावाट, सोलर सह छह घंटे 300 मेगावाट एवं सोलर-सह 24 घंटे 200 मेगावाट विद्युत प्रदाय की सिंगल साइकिल चार्जिंग आधारित ऊर्जा भंडारण परियोजना की स्वीकृति प्रदान की गयी है।

2026 में 'कमल' से सजेगा ब्रिक्स का मंच

भारत की अध्यक्षता में समूह का और बढ़ेगा रुतबा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की अध्यक्षता में 2026 में ब्रिक्स का मंच कमल से सजने से जा रहा है। दरअसल विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार को ब्रिक्स 2026 के लिए आधिकारिक लोगो और वेबसाइट लॉन्च की है। इस लोगो में मौजूद कमल सबका ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। लॉन्च के बाद विदेश मंत्री ने कहा है कि भारत की अध्यक्षता के दौरान ब्रिक्स समूह के जरिए वैश्विक कल्याण को आगे बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा, खासकर ऐसे समय में जब समूह अपनी 20वीं वर्षगांठ मना रहा है। बता दें कि दुनिया की पांच बड़ी अर्थव्यवस्थाएं ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका ब्रिक्स समूह की अगुवाई करती हैं। इसकी स्थापना साल 2006 में हुई थी। बीते कुछ सालों में समूह का तेजी से विस्तार हुआ जहां मिस्त्र, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात और इंडोनेशिया भी ब्रिक्स में शामिल हो गए।

- ब्रिक्स की मजबूती से तिलमिलाया है अमेरिका-

शुरुआत के बाद से ही ब्रिक्स एक अहम वैश्विक मंच के तौर पर उभरकर सामने है। फिलहाल इसमें कुल 11 सदस्य देश शामिल हैं, जो दुनिया की करीब 49.5 प्रतिशत आबादी, लगभग 40 प्रतिशत वैश्विक जीडीपी और करीब 26 प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं भारत की 2026 की अध्यक्षता में ब्रिक्स से वैश्विक स्तर पर सहयोग और प्रभाव और बढ़ने की उम्मीद है। समूह ने समय समय पर अमेरिकी डॉलर के वर्चस्व को सीधी चुनौती देने की भी कोशिश की है।

घुसपैठियों की खैर नहीं, अब होगा बड़ा ऐक्शन

एनआईए ने अवैध बांग्लादेशी मामले की जांच अपने हाथ में ली

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ मामले की जांच को अपने हाथ में ले लिया है, जो अब तक दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के पास थी। मंगलवार को अधिकारियों ने बताया कि एनआईए ने पिछले सप्ताह दिल्ली पुलिस से यह मामला ट्रांसफर कर लिया और जांच शुरू कर दी है। एजेंसी ने मामले में एक नया एफआईआर भी दर्ज किया है। गृह मंत्रालय के निर्देश पर यह कदम उठाया गया है, ताकि अवैध प्रवास को ऑपरेट करने वाले नेटवर्क पर सख्त कार्रवाई हो सके। ये नेटवर्क राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। दिल्ली पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई के दौरान 2 एफआईआर दर्ज किए थे, जिसमें इस घुसपैठ के पीछे एक गहरी साजिश होने का दावा किया गया था।

एनआईए को कई पहलुओं की करनी होगी जांच

अब एनआईए के नियंत्रण में आने के बाद जांच की गुंजाइश काफी बढ़ गई है। एजेंसी अब पूरे सिंडिकेट को ट्रेस करने, मनी ट्रेल का पीछा करने, फंडिंग चैनलों की जांच करने और अंतरराज्यीय व सीमा पार लिंक्स का पता लगाने पर जोर दे रही है। एनआईए की यह जांच अवैध घुसपैठ के रैकेट के पीछे छिपी व्यापक साजिश को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। अधिकारियों का मानना है कि यह मामला केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन भी हैं।

अब समंदर में भी नहीं बचेंगे भारत के दुश्मन

किया जा सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पूरा कॉन्ट्रैक्ट मार्च 2026 तक साइन होने की उम्मीद है।

मझगांव डॉकयार्ड में ही बनेंगी पनडुब्बियां: इन पनडुब्बियों की सबसे बड़ी खासियत एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन तकनीक है, जिसकी बदौलत ये लंबे समय तक बिना सतह पर आए समुद्र की गहराइयों में ऑपरेट कर सकेंगी। यही उन्नत तकनीक इस प्रोजेक्ट के इतने लंबे समय तक अटके रहने का मुख्य कारण रही। दरअसल, भारतीय नौसेना ऐसी पनडुब्बियां चाहती थीं जो ज्यादा स्टील्थ वाली हों, कम शोर पैदा करें और दुश्मन की नजरों से लंबे समय तक छिपी रह सकें। इतना ही नहीं, ये छह पनडुब्बियां पूरी तरह भारत में मझगांव डॉकयार्ड में ही बनेंगी, जिससे 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को मजबूत बढ़ावा मिलेगा। जर्मनी की तकनीकी विशेषज्ञता और भारत की निर्माण क्षमता का यह संयोजन भारतीय नौसेना को रणनीतिक बढ़त देगा। वहीं,

विशेषज्ञों का मानना है कि इन स्टील्थ पनडुब्बियों के शामिल होने से हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री निगरानी, प्रतिरोधक क्षमता और रणनीतिक संतुलन और मजबूत होगा। बढ़ती वैश्विक चुनौतियों के बीच यह प्रोजेक्ट भारत के रक्षा तंत्र को पहले से कहीं अधिक मजबूत साबित होगा। टीओआई की रिपोर्ट के अनुसार, पी 75(आई) के तहत आने वाली ये नई पीढ़ी की पनडुब्बियां प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के साथ आएंगी और इनमें लगभग 60 फीसदी तक उच्च स्वदेशीकरण स्तर होगा। यह परियोजना भविष्य की पी-76 के लिए एक पुल का काम करेगी, जहां पारंपरिक पनडुब्बियां पूरी तरह स्वदेशी डिजाइन पर आधारित होंगी। अब सबसे बड़ा सवाल है कि एआईपी तकनीक आखिर है क्या। एआईपी का पूरा नाम एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन है। यह एक आधुनिक तकनीक है जो गैर-परमाणु पनडुब्बियों को बिना हवा के लंबे समय तक पानी के नीचे रहने की क्षमता देती है। सामान्य डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों को बैटरी चार्ज करने के लिए समय-समय पर सतह पर आना पड़ता है या स्नॉर्कल का इस्तेमाल करना होता है, जिससे दुश्मन की नजर में आने का खतरा बढ़ जाता है। तकनीक इस कमजोरी को काफी हद तक खत्म कर देती है।

हथियार बनाते हैं खतरनाक

रिपोर्ट्स के अनुसार,कंपनी के साथ साझेदारी में बनने वाली इन पी-75(आई) पनडुब्बियों को शुरू से ही एआईपी के साथ-साथ भूमि-हमला क्रूज मिसाइलों और अन्य अगली पीढ़ी की तकनीकों को शामिल करने के लिए डिजाइन किया गया है। एआईपी वाली पनडुब्बियां सिर्फ लंबे समय तक छिपे रहने के लिए ही नहीं जानी जातीं, बल्कि इनमें लगे हथियार इन्हें और खतरनाक बनाते हैं। मुख्य हथियार टॉरपीडो होते हैं, जो आमतौर पर 533 मिमी कैलिबर के भारी वजन वाले होते हैं। इनका इस्तेमाल दुश्मन की पनडुब्बियों और बड़े सतह युद्धपोतों को निशाना बनाने के लिए किया जाता है।